Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
दिनांक - 21 अप्रैल, 2021

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-2 'बहू की विदा' (एकांकी) लेखक - विनोद रस्तोगी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या सत्रह पर दिए पाठ-2 'बहू की विदा' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम 'बहू की विदा' नामक एकांकी को समझने जा रहे हैं। इसलिए आपके पास अपनी पुस्तक एवं एक उत्तर-पुस्तिका का होना आवश्यक है। पाठ को समझाते-समझाते आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। प्रश्न एकांकी से ही संबंधित होंगे। आपने उन प्रश्नों को सुनकर अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोकना है। उस दौरान आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखने हैं। प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक एवं रुचि से सुनेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हो गए हैं।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 19 तक पढ़ा था। आज हम पृष्ठ संख्या 20 से समझने का प्रयास करेंगे। इससे पहले मैं आपको पिछले सप्ताह जो पढ़ा था, उसके बारे में संक्षेप में बताने जा रही हूँ। आपने ध्यानपूर्वक सुनना है।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - 2 'बहू की विदा') 2

जीवनलाल एक धनी व्यापारी है जिसके लिए पैसा ही सब कुछ है भावनाओं का उसके लिए कोई मोल नहीं है। प्रमोद अपनी बहन कमला को पहला सावन मायके में मनाने के लिए विदा कराने उसके ससुराल आता है लेकिन कमला के ससुर जीवनलाल बहू को विदा करने से मना कर देते हैं। उनका मानना है कि विवाह के समय कमला के घरवालों ने उचित दान-दहेज नहीं दिया तथा विवाह में बारात की खातिरदारी भी ठीक से नहीं की जिससे उनका बहुत अपमान हुआ, उस कशीश चोट का घाव आज भी ताजा है। यदि प्रमोद अपनी बहन को विदा कराना चाहता है तो उस चोट के मरहम के रूप में पाँच हज़ार रुपए लाकर दे अन्यथा वह कमला को विदा नहीं करेंगे। जीवनलाल के इस निर्णय को प्रमोद सशस्त्र अन्याय कहता है। उसका मानना है यदि रमेश बाबू यहाँ होते तो यह अन्याय न करने देते। प्रमोद की इन बातों को सुनकर जीवनलाल तिलमिला उठते हैं। वे रमेश की प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि वह तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीजी कभी नहीं कर सकता। प्रमोद उन्हें समझाते हुए कहता है कि आप ये मत भूले कि आप भी बेटेवाले हैं।

बच्चो ! अब अपनी इस एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या 20 से समझने का प्रयास करते है। जीवनलाल ने पिछले महीने ही गौरी का विवाह किया है। उन्होंने अपनी बेटी के विवाह में कोई कसर नहीं छोड़ी। बारात की खातिरदारी देखकर सब हैरान रह गए। भरपूर दहेज को देखकर लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। यही कारण है कि लड़की वाला होकर भी उनका सिर झुका नहीं बल्कि गर्व से तना हुआ है।

जीवनलाल प्रमोद को बताते हैं कि रमेश गौरी के ससुराल गौरी को विदा कराने गया है कुछ देर में वह गौरी को ससुराल से लेकर आता ही होगा। जीवनलाल का मानना है कि भरपूर दहेज देने के कारण गौरी के ससुरालवाले गौरी को रमेश के साथ सहर्ष विदा कर देंगे। लेकिन

तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे। अर्थात् तुम्हारी बहन अपने मायके जाने का स्वप्न सजाए बैठी होगी। वहाँ अपनी माँ, सखियों-सहेलियों के साथ हँसी खुशी से सावन बिताना चाहती होगी, परन्तु वह मायके नहीं जा सकेगी तो कमला के सपनों का खून हो जाएगा। इसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारी तथा तुम्हारी माँ की होगी। तुम्हारे हाथों से दहेज की पूर्ति नहीं की जा सकती। इसलिए तुम्हारी माँ का आँचल भी अपनी बेटी को लिपटा नहीं पाएगा।

जीवनलाल बेटी और बहू को एक समान नहीं समझते हैं इसलिए वे प्रमोद को गुस्से से कहते हैं कि बेटी और बहू को एक ही तराजू में तौलना चाहते हो? बेटी-बेटी है और बहू-बहू। जीवनलाल अपनी बेटी गौरी को प्यार करता है और उसके प्रति सहृदयता का भाव रखता है लेकिन बहू को पराई लड़की समझता है। उसे इस बात का ज्ञान नहीं कि बहू उसके परिवार की एक सदस्य है और वह बेटी के समान ही है। जब प्रमोद ने देखा कि जीवनलाल अपनी बहू को दहेज कम देने के कारण विदा न करने की ज़िद पर अड़े हैं तब वह लाचार होकर जीवनलाल से पूछता है कि क्या वह जाने से पहले अपनी बहन से मिल सकता है। जीवनलाल मान जाते हैं और प्रमोद से कहते हैं कि कमला को यह भी बता देना कि अगली बार मरहम अर्थात् दहेज के रूप में पाँच सौ रुपए लेकर कब आओगे। जीवनलाल अपनी पत्नी राजेश्वरी कमला को भेजने के लिए आवाज़ लगाते हैं और स्वयं माली से कहकर झूला डलवाने की व्यवस्था में जुट जाते हैं ताकि उनकी बेटी गौरी उस पर झूलकर अपनी सहेलियों के साथ पहले सावन का आनंद उठा सके।

जीवनलाल के प्रस्थान के बाद प्रमोद बैठ जाता है। कमला अन्दर से आती है। उसके चेहरे पर उदासी है। उसने लाल रंग की चूड़ियाँ पहनी हैं। वह प्रमोद के पास आकर रोने लगती है। क्योंकि उसके ससुर ने दहेज पूरा न देने की बात कहकर कमला के भाई प्रमोद को लज्जित

किया। और पाँच हज़ार रुपए दिए बिना कमला की विदाई करने से मना कर दिया था। प्रमोद कमला को शांत कराते हुए कहता है कि तुम्हारे इन आँसुओं का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। प्रमोद ने कहा कि इन मोतियों का मूल्य अर्थात् निश्चल एवं सद्गुणों का महत्त्व समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। यहाँ प्रमोद ने जीवनलाल की तुलना पत्थर से की और कहा कि जीवनलाल कठोर हृदयी, लोभी एवं भावशून्य व्यक्ति है जो तुम्हारे आँसुओं से नहीं पिघल सकता।

प्रमोद ने कमला को धीरज बँधाते हुए कहा कि तुम चिंता मत करो मैं चोट का मरहम लाकर शीघ्र ही तुम्हें विदा कराकर ले जाऊँगा। प्रमोद ने मरहम के पाँच हज़ार रुपए के इंतज़ाम के लिए अपने मकान को बेचने का निश्चय किया ताकि कमला की विदाई हो सके लेकिन कमला ने अपने सुख-सुहाग की कसम देकर उसे मकान बेचने से मना कर दिया।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट का विराम देंगे तथा उन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. प्रमोद ने किस बात को सरासर अन्याय बताया?
प्रश्न 2. 'बेटी वाले होकर भी हमारी मूँछें ऊँची हैं' – जीवनलाल के इस कथन का क्या आशय है?
प्रश्न उ. प्रमोद अपने मकान को क्यों बेचना चाहता था?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. प्रमोद ने जीवनलाल के द्वारा पाँच हज़ार रुपयों की वजह से कमला की विदाई न करने को सरासर अन्याय कहा।

उत्तर 2. 'बेटी वाले होकर भी हमारी मूँछें ऊँची हैं'–जीवनलाल के इस कथन का अभिप्राय यह है कि जीवनलाल ने अपनी बेटी गौरी की शादी में भरपूर दहेज दिया

या। इसलिए उसे ससुरालवालों के सामने झुकने की कोई आवश्यकता नहीं है

उत्तर 3. प्रमोद अपना मकान जीवनलाल की इच्छा पूर्ति अर्थात् दहेज के रूप में पाँच हज़ार रुपए जुटाने के लिए बेचना चाहता है ताकि वह कमला को विदा कराके ले जा सके।

बच्चो! अब हम इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 22 से समझने का प्रयास करते हैं। प्रमोद अपनी बहन को सांत्वना देते हुए कहता है कि वह शीघ्र ही अपना गिरे हाल वाला मकान बेचकर पाँच हज़ार रुपए लेकर आएगा और तुम्हें विदा करवाकर ले जाएगा। तब कमला ने प्रमोद को ऐसा न करने को कहा क्योंकि उसे एक छोटी-सी इच्छा पूरी करने के लिए इतनी बड़ी रकम चुकाना उचित नहीं लगा। साल दो साल में प्रमोद की छोटी बहन विमला का विवाह भी तो करना है। उस समय भी रुपयों की आवश्यकता होगी। कमला प्रमोद को आश्वासन दिलाते हुए कहती है कि धीरे-धीरे जीवनलाल का व्यवहार ठीक हो जाएगा और वे दहेज की बात को भी भूल जाएँगे। अपनी सास के बारे में कमला ने बताया कि वे तो ममता की मूर्ति हैं, वे तो मुझे अपनी बेटी की तरह प्यार करती हैं। इतने में राजेश्वरी का प्रवेश होता है। राजेश्वरी जानती हैं कि उसके पति (जीवनलाल) अपनी जिद के आगे किसी की नहीं सुनते। उसके लाख समझाने पर भी वे अपनी बहू को विदा कराने को तैयार नहीं हुए। उन्हें इन्सान से ज्यादा पैसों से प्यार है। राजेश्वरी प्रमोद की आर्थिक स्थिति के बारे में जानती है। वह अपनी बेटी गौरी तथा बहू कमला के साथ मन, वाणी और कर्म से एक समान व्यवहार करती है दोनों की भावनाओं का समान आदर करते हुए वह कहती है कि यह विदाई ज़रूर होगी। इसलिए वह प्रमोद से कहती है कि मैं तुम्हें रुपए देती हूँ। इन काग़ज़ के रंग-बिरंगे टुकड़ों को उनके मुँह पर मार देना और अपनी बहन कमला को विदा करा लेना।

राजेश्वरी कमला को तिजोरी की चाबी पकड़ाकर उसे वहाँ से रुपए ले आने को कहती है। अर्थात् वह अपनी ओर से पाँच हज़ार रुपए देने का प्रस्ताव रखती है परन्तु कमला चाबी को लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती है। राजेश्वरी स्वयं जाकर रुपए लाने को कहती है तभी प्रमोद उन्हें रोकदेता है। वे दोनों राजेश्वरी के इस प्रस्ताव को मानने से राजी नहीं होते हैं। प्रमोद राजेश्वरी से कहता है कि मुझे रुपए नहीं चाहिए। मैं कमला को बिना विदा कराए ही जा रहा हूँ।

राजेश्वरी जानती थी कि प्रमोद के लिए इतनी बड़ी रकम का इंतज़ाम करना आसान नहीं है इसलिए वह प्रमोद को चुपचाप पैसे देकर इस समस्या को हल करना चाहती थी।

बच्चो! आज हम इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 23 तक विस्तार से समझ लिया है। आशा करती हूँ कि आपने इस एकांकी को रुचि से सुना एवं समझा होगा। एकांकी के शेष भाग को हम अगले सप्ताह समझेंगे। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 23 तक दो-तीन बार ऊँचे स्वर में पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से स्वयं करने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

* निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"बेटी और बहू को एक तराजू में तौलना चाहते हो? बेटी-बेटी है, बहू-बहू।"

प्रश्न (क) उपर्युक्त कथन किसने किससे कहा है तथा कब?
प्रश्न (ख) बेटी और बहू से किस-किस की ओर संकेत है?
प्रश्न (ग) बेटी वाला होकर भी वक्ता को किस बात का अहंकार था?
प्रश्न (घ) 'बेटी-बेटी है और बहू-बहू' - इस कथन से वक्ता की किस मानसिकता पर प्रकाश पड़ता है?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]